॥ सप्तम अध्याय ॥

। 'अमृत और विष' उपन्यास का उद्देश्य ।

अमृत और विष उपन्यास का उद्देश ।

उपन्यास का प्रमुख संगठन तत्व उद्देश्य होता है । कुछ लोग केवल मनोरंजन के लिए उपन्यास पढते है । यह तथ्य होनेपर भी उपन्यास केवल मनोरंजन के लिए लिखा जाता है यह तथ्य नहीं । प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रुप से प्रायः सभी उपन्यासों के पीछे कोई न कोई विशिष्ट उद्देश्य या जीवन के प्रति विशिष्ट दृष्टीकोण मिलता है । विषय क्षेत्र के विकास के साथ साथ उद्देश्य मे भी वैविध्य आया है । अब उपन्यास केवल मनोरंजन अथवा उपदेशात्मकता के लिए नहीं लिखे जाते है । मानव जीवन के विविध परिवेशों की प्रायः सभी संभाव्य समस्याएँ उपन्यास में उठायी जाती है उनपर चिन्तन किया जाता है ।

एक युग और समाज के जीवन के चित्रण द्वारा वर्तमान युग और समाज के जीवन को प्रेरणा देने का काम भी उपन्यास का है । एक साथ पूरे जीवन की झाकियाँ देकर मानव जीवन का ज्ञान प्राप्त करके हम अपने दैनिक जीवन में सामजस्य और सफलता प्राप्त कर सकते है । कभी कभी दैनिक जीवन की चिन्ताग्रस्त अवस्था से उबकर एक नवीन वातावरण में प्रवेश कर शांती प्राप्त करते है । इस प्रकार उपन्यास का उद्देश्य बहुमुखी होता है ।

अमृत और विष उपन्यास की रचना सामाजिक उद्देश्य से की गयी है । सामाजिक जीवन के सत् के प्रति आस्था और संदेश देना और असत् पक्ष का उद्घाटन करना नागरजी का प्रमुख उद्देश्य रहा है । डॉ. पुष्पा कोछड लिखती है –

"शिल्प के दृष्टीसे अमृत और विष स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास में सर्वथा नवीन प्रयोग है ।"१

इसमें उन्होने अपने केन्द्रीय पात्र को उपन्यासकार का रुप देकर उसकी जीवनी कथा तो कही ही है, साथ ही बीच-बीच में उस उपन्यासकार द्वारा रचित एक संपूर्ण उपन्यास भी अपने कृतिमें अंतर्भुक्त किया है । इस प्रकार उपन्यासकार दोहरे कथानक को लेकर चला है । डॉ. भारतभुषण अग्रवाल का कहना है –

" उनके इस प्रयोग की सार्थकता यही है की, उसके माध्यम से बाह्य शब्दांडम्बर के नीचे दमित वस्तूस्थिति का अभियान कराने में समर्थ हो जाते है । नागरजीने जिस दोहरे दृश्य की कला युक्ती को अपनाया है । वह ऐसे ही किसी उद्देश में अपनी सार्थकता पा सकती थी । ऐसी किसी सार्थकता के अभाव में ये दो स्तर एक ही सत्य के दो आयाम नही बन पाते । वरन् दो असम्बध्द कथा - सुत्र ही बने रह जाते और उपन्यास में अतिरिक्त प्रभाव की संभवना थी, वह प्रतिफलित नहीं हो पाता ।" २

नागरजी के इस अदभूत शिल्प कौशल के अतिरिक्त लेखकीय तटस्थतता और निस्संगता से उपन्यास के वस्तू पक्ष में गांभिर्य आ गया है । वस्तूतः नागरजी ने अपने इस कृति में हमारे समाज का गम्भीर समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत किया है । वह उनकी गहरी सुझ-बुझ, यथार्थ दृष्टी और अध्ययन, चिंतन-मनन तथा अनुभवी की एक विशाल राशी समेटे हुए है । लेखक संपूर्ण परिवेशमें स्वय जीता भी है । सारे आर्थिक राजनितीक सामजिक संकट को भोगता भी है । किन्तू फिरभी कही भी वह संलिप्त नही हुआ है । एक मननशील द्रष्टा के रुप में युग और समाज के विविध पक्षों का उदघाटन करता है । यही उसके शिल्प कौशल्य की शक्ती है की, प्रथम उपन्यास और उसमे अंतर्मुक उपन्यास कही भी शिथिल नहीं पडता ।

लेखक ने सामाजिक समस्याओं के साथ साथ मानव जीवन के विविध परिवेशों की संभाव्य समस्याओं पर विचार व्यक्त किया है । उन्होने उपन्यास के आरंभ में मनुष्य जीवन की सार्थकता पर दृष्टीपात किया है ।

"आदमी जन्म से लेकर मरने के दिन तक इतना सारा दुःख सुख भोगता है, हजारो चेहरे, रुप, रंग, वातावरण देखता है, सुनता है, सहता है - आखिर किस लिए ? व्यक्ति के जीवन की ढेर सारी उपलब्धियाँ जिन्हे प्राप्त करने के लिए जान लडाता है, अंत में निकम्मी होकर नष्ट हो जाती है ।" ३ अपने इस प्रश्न के समाधान के

लिए लेखक संसार के विष और अमृत रुप को प्रस्तुत करता है -

"विश्राम करु या मर जाऊँ ? तब तो हेमिंग्वे के बूटे मछेरे से हार अंधकार प्रकाशमय जीवन में न्याय के लिए कर्म करना ह होगा, यह बन्धन ही मेरी मुक्ति भी है । इस अंधकार ही में प्रकाश पाने के लिए मुझे जीना है ।" ४

यह कार्य ही मानव को मानव के समीप लाता है । अतः कर्म करने में ही मनुष्य जीवन की सार्थकता है ।

उपन्यास का नायक अरविंद शंकर सृजन के क्षणों से गुजरते हुए एक नये उपन्यास सृजन करता है । तब वह अपने उद्देश्य को भी स्पष्ट करता है –

"नौजवानों की आशा – आकांक्षाओं और कुंठाओं को चित्रित करना क्योंकि आखिर आनेवाली दुनियाँ है तो उन्ही की ।" ५

युवकों की आस्था विश्वास, आशा आकांक्षाओं का चित्रण करना ही नागरजी का मूल प्रतिपाद्य है और उसमे उन्हें पूर्ण सफलता मिली है । डॉ.सुरेश सिन्हा के मतानुसार – "युवावर्ग के भीषण मानसिक यंत्रणाओं एवं द्वंदो की उपेक्षा न कर उन्हे कलात्मक अभिव्यक्ति देकर नागरजी ने इस उपन्यास को आज के तरुण वर्ग के आंतरिक संकट का महत्वपूर्ण दस्तावेज बता दिया है । स्वातंत्र्योत्तर व्यवस्था में फैली अराजकता, भाई भतीजावाद, अवसरवादिता, मूल्यहीनता, आंडबर और कायरता के साथ चरित्र तथा विश्वास के संकट ने आज के व्यक्ति के सामने अस्तित्व का जो संकट पैदा कर दिया है यह उपन्यास उसकी कलात्मक अभिव्यक्ति है ।" ६

नागरजी ने इस उपन्यास में अनेक समस्याओंका विस्लेषण देकर सामाजिक सजग मानवतावादी आस्था को वाणी दी है । बादामसिंह रावत कहते है –

"अमृत और विष में रुढियों से जकडे हुए दलदल मे फँसे हुएँ भारतीय समाज का अंकन है जो अपनी शतुरमुर्गी मुद्रा को जीवन की स्वाभिविकता मानता है परन्तु लेखक की दृष्टी समाज की पलायनवादी प्रवृत्तियों के साथ उस उभरते संघर्ष पर भी है जो शोषण के जबडे चीर देने का हौसला रखता है ।" ७

प्रेमचंद की तरह उपयोगितावादी उपन्यासकार होने के कारण नागरजी के अनुभवों की समृध्दता और संपन्नता, अध्ययन की व्यापकता और गहनता तथा चिंतन की प्रौढता का बडा आकर्षक संगी और संवेदनशील हृदय तथा मन की पूरी ईमानदारी के साथ युग जीवन और युग यथार्थ का चित्रण किया है । वे समस्याओंका विश्लेषण और समाधान भी देकर पाठकों के लिए ग्राह्य बनाते है । इस उपन्यास में चित्रित समस्याएँ इसप्रकार है –

१) पूँजीवादी व्यवस्था के बीच मध्यमवर्गीय लेखक की समस्या –

अरविंद शंकर प्रथम उपन्यास के प्रमुख पात्र है । वे पारिवारिक जीवन में परिवार के असंतुष्ट मुखिया है । किंतु साहित्य जगत में पर्याप्त मानसम्मान प्राप्त है । वे एक मध्यमवर्गीय लेखक है प्रगतिशील, आदर्शवादी यथार्थ को समझकर अपनी आस्था से आगे बढनेवाले स्वतंत्र व्यक्तित्ववाले लेखक है । जीवन मे सत्य, न्याय, मानवता, देशप्रेम, ईमानदारी आदि के साथ सीधे रास्ते से चल रहे थे लेकिन उन्हे न आंतरिक सुख मिला न संतोष ।

२) नई पुरानी पीढी के संघर्ष की समस्या ।

इन दोनो पीढियोंका संघर्ष राजा केशोराय की बराहदरी से लेकर निर्माण होता है । बाराहदरी युवकों के अधिकार में है जिसमें वे अध्ययन और वाचनालय चलाते है पुरानी पीढी के लोग अपने स्वार्थ के लिए वहाँ मंदिर बनवाना चाहते हैं । परिणाम स्वरुप दो दल बन जाते है । एक नवयुवकोंका और दूसरा रुढिवादी बुजूर्गोका ।

३) युवक छात्र विद्रोह की समस्या –

प्राचीन पीढी को नैतिक दृष्टी से आदर्शहीन भ्रष्टाचार से युक्त, स्वार्थ और रुढिवाद से ग्रस्त देखकर आज का युवक अन्याय के खिलाफ विद्रोह कर उठता है । सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक टूटते ढाँचोंको बनाये रखनेवालों के प्रति उसमें आक्रोश है ।

४) विवाह समस्या ।

प्राचीन काल से लेकर आज तक विवाह एक बहुत बढिया समस्या बन गयी है । प्रेम विवाह, विधवा विवाह, अन्तर्जातीय विवाह दहेज प्रथा आदि सभी दिन ब दिन कठिन होते जा रहे है । पुलीगुरु की लडकी की शादी में दहेज प्रथा के साथ समधी आदि द्वारा किस प्रकार जिद की जाती है और त्रस्त किया जाता है इसका विस्तृत चित्रण किया है । साथ ही रमेश और रानीबाला के विवाह के साथ प्रेमविवाह, विधवा विवाह, अन्तर्जातीय विवाह की समस्याओंको उठाया है ।

५) भारतीय संस्कृति की समस्या ।

रानी विक्टोरिया के जमाने में राघेलाल और शेख फकीर मुहम्मद में भाईचारेका संबंध स्थापित हो चुका था वह सांस्कृतिक समन्वय है लेकिन वर्तमान युग में पूँजीपति, सामंतवादी, लोग, असंगठन, फूट, विलास, व्यभिचार, डाका, खून और चोरबाजार से भरे है । भारतीय संस्कृति की आड मे सांस्कृतिक तथा शिक्षण संस्थाओं में भी पॉलिटिक्स घुस गया है जिसमे सांप्रदायिकता भाषावाद, जातीयवाद आदि के कारण अपनानेकी भावना गायब हो जा रही है ।"उपर्युक्त समस्याओंको प्रा. पी. एस. पाटील के शिवाजी विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किये गये "समस्यामूलक उपन्यास : अमृत और विष" से लिया गया है ।"८

निष्कर्ष –

अमृत और विष एक प्रयोगशील उपन्यास है । इसमे एक उपन्यास के अन्दर दुसरा उपन्यास समान्तर रुपसे चलता है । लेखक ने दोनो कथानकों को बिंब – प्रतिबिंब के रुप में अग्रसर करना चाहा है ।

इसमे सामाजिक यथार्थता सांगोपांग, तटस्थ, निर्मिक और मार्मिक चित्रांकन किया है । मध्यमवर्गीय भारतीय समाज अपनी बौध्दीकता जर्जर जिजीविषा, अंधविश्वासो में लिपटी हुई धार्मिकता, श्रृंखलाओं में कसमसाती हुई संस्कृती, प्रजा तंत्र के नाम पर पनपता हुआ स्वार्थान्ध राजतंत्र, अस्त होता हुआ समाजवाद और घटती हुई वर्तमान युगीन चेतना के बिंब प्रतिबिंबीत हुए है । विक्टोरिया राज के भारत से आज के भारत के प्रत्येक परिवर्तन प्रत्येक स्पंदन चेतना के वे सह यात्री रहे है । एक वंश की अनेकअनेक पिढीयों की कहानी के माध्यम सें उन्होने भारत का इतिहास गत और समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया है ।

मनोरंजन और समाजहित दोनों की दृष्टी से "अमृत और विष" उपन्यास ने सफलता प्राप्त की है ।

नागरजीने सामाजिक समस्याओंके साथ जीवन के शाश्वत प्रश्नोंपर भी विचार व्यक्त किया है । अरविंद शंकर का समूचा संघर्ष हेमिंग्वे के बुढे मछेरे के संदर्भ में प्रस्तुत किया है । बुढे मछेरे और बचपन में उन्हे धकेल धकेल कर आगे बढाने वाले बछडे का चित्र उन्हे विषम परिस्थितियों में भी दृढता के साथ संघर्ष करने तथा आगे बढने की शक्ति देता है । कर्म करने में ही मनुष्य की सार्थकता है । इस प्रकार स्वंयम नागरजी अथवा उनके कल्पित उपन्यासकार अरविंद शंकर की सृजन प्रेरणा का प्रेरक बिंदु निरंतर प्रगतिशील जीवन और मानव समुदाय के प्रती आस्थावादी दृष्टी है । गीता की भाँती निरंतर कर्म करने का महत संदेश देने में ही उपन्यास की सफलता है ।

संदर्भ

१)	डॉ. पुष्पा कोछड	–	'हिन्दी के महाकाव्यात्मक उपन्यास	पृ.१२९
२)	डॉ. भारतभूषण अग्रवाल	–	'आलोचना'	पृ.९३
३)	अमृतलाल नागर	–	'अमृत और विष'	पृ.१०
४)	वहीं	–		पृ.३१९
५)	वहीं	–		पृ.४२
६)	सुरेश सिन्हा	–	'हिन्दी उपन्यास'	पृ.२५९
७)	बादामसिंह रावत	–	'समकालीन हिन्दी साहित्य'	पृ.९२
८)	पाखील पी.एस.	–	समस्या मूलक उपन्यास 'अमृत और विष'	पृ.३४